आजादी का अमृत महोत्सव तथा पर्यावरण हेतु लाइफ स्टाइल के अंतर्गत भा.वा.अ. शि.प.–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा दिनांक 24.03.2023 को "जनभाषा में पर्यावरण के स्वरः अवधी" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला एवं काव्य पाठ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि केन्द्र के इस सत्र में वानिकी विस्तार सामग्री अवधी भाषा में प्रकाशित करने की योजना है। कार्यशाला के माध्यम से वक्ताओं ने वन एवं पर्यावरण सम्बन्धी तकनीकों तथा जागरूकता को प्रसारित करने के लिए संवाद एवं प्रकाशन को अवधी भाषा में करने पर बल दिया।

वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए कहा कि वृक्षारोपण कार्यक्रमों विशेषतः कृषिवानिकी हेतु किसानों को समझाने में अवधी भाषा सहायक है। पर्यावरण के प्रति समर्पित अजय क्रान्तिकारी ने अपनी पंक्तियों में मनुष्य को पर्यावरण का दोषी बताया। उन्होने अवधी भाषा में कहा कि "जीवन एसी म नाहीं, देशी म बाटय।" प्रख्यात कवि अशोक सिंह 'बेशर्म' ने अपनी पंक्तियों में लोक रंगों और माटी की खुशबू से परिचय कराते हुए "कांव–कांव कागा कराई, बइठि के मुंडेरी, गवनै हेराई गवा, कहाँ–कहाँ हेरी।"

इसी क्रम में आचार्य अनीस 'देहाती' नं सामाजिक प्रदूषण को पर्यावरण प्रदूषण का स्रोत बताया साथ ही कुछ पंक्तियां कहीं कि "डिगरी तमाम लइके अहैं पान लगावत, हमरे सपूत यही बरे फेलइ भले अहइ।" शैलेन्द्र 'मधुर' ने उपस्थित कवियों को हस्ताक्षर बताकर सम्बोधित किया, साथ ही "पर्यावरण सब महकाई, एक–एक पेड़ सब लगाई" पंक्ति के माध्यम से पर्यावरण बचाने का आह्वान किया। कार्यक्रम के अंत में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम कार्यक्रम में केन्द्र के अधिकारी एवं कर्मचारी के साथ विभिन्न परियोजनाओं के शोध छात्र–छात्राएं आदि उपस्थित रहे।

दिनांक : 24 मार्च 2023, समय : अपराह्न 02:00
अजय कान्तिकारी
रामलखन शुक्ला
अनीस देहाती

अजय कान्तिकारी
रामलखन शुक्ला

LiFE
G20
कार्यशाला
जनभाषा में पर्यावरण के स्वर : अवधी
दिनांक : 24 मार्च 2023, समय : अपराह्न 02:00
भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज
ICFRE -ERC

ICFRE -ERC
भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद
LiFE
कार्यशाला
जन भाषा में पर्यावरण के स्वर : अवधी
भा०वा०अ०शि०प०-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र

LiFE
G20
कार्यशाला
जनभाषा में पर्यावरण के स्वर : अवधी
दिनांक : 24 मार्च 2023, समय : अपराह्न 02:00
भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज

ICFRE -ERC
भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद
INDIAN COUNCIL OF FORESTRY RESEARCH AND EDUCATION
वनस्पतयः शान्तिः
कार्यशाला

LiFE
कार्यशाला
जनभाषा में पर्यावरण के स्वर : अवधी
दिनांक : 24 मार्च 2023, समय : अपराह्न 02:00
भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज
ICFRE -ERC

LiFE
कार्यशाला
जनभाषा में पर्यावरण के स्वर : अवधी
दिनांक : 24 मार्च 2023, समय : अपराह्न 02:00
भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज

कार्यशाला
जन भाषा में पर्यावरण के स्वर : अवधी
ICFRE -ERC

LiFE
Lifestyle for Environment
G20
कार्यशाला
जनभाषा में पर्यावरण के स्वर : अवधी
दिनांक : 24 मार्च 2023, समय : अपराह्न 02:00
शैलेश मधुर
अशोक सिंह बेशर्म
अनीस देहाती
भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पु

देहाती
प्रयागराज

किसानों को समझने में अवधी भाषा सहायक

प्रयागराज, वरिष्ठ संवाददाता। वन अनुसंधान केंद्र कार्यालय में शुक्रवार को 'जनभाषा में पर्यावरण के स्वरूपः अवधी', विषय पर एक गोष्ठी और काव्यपाठ का आयोजन हुआ। केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। उन्होंने बताया के केंद्र वानिकी विस्तार सामग्री इस सत्र में अवधी भाषा में प्रकाशित करने जा रहा है।

वन अनुसंधान केंद्र में कार्यशाला को संबोधित करते केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह।

कार्यशाला में वक्ताओं ने वन एवं पर्यावरण की तकनीकों को अधिक से अधिक प्रसारित करने के लिए अवधी में संवाद कराने पर बल दिया। वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने कहा कि पौधरोपण कार्यक्रमों और विशेष रूप से कृषिवानिकी को किसानों को समझाने में अवधी भाषा सहायक है। अजय क्रांतिकारी ने 'जीवन एसी म नाही, देशी म बाटय' सुनाकर बताया कि कैसे मनुष्य पर्यावरण को प्रदूषित कर रहा है। कवि अशोक सिंह 'बेशर्म' ने 'कांव-कांव कागा कराई, बइठी के मुंडेरी, गवनै हेराई गवा, कहां-कहां हेरी', के जरिए बताया कि कैसे शहरीकरण बढ़ रहा है। आचार्य अनीस देहाती ने 'डिगरी तमाम लइके अहैं पान लगावत, हमरे सपूत यही बरे फेलई भले अहइ' सुनाया। कवि शैलेंद्र मधुर ने 'पर्यावरण सब महकाई, एक-एक पेड़ सब लगाई', के जरिए उपस्थित जनमानस से पौधरोपण की अपील की। केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में डॉ. एसडी शुक्ला, रतन गुप्ता के साथ अन्य कर्मचारी व शोधार्थी विजय, राहुल, कुलदीप, दर्शिता, स्वाति, मोहया आदि मौजूद रहे।

बाग-बगैचा खड़हर होइगा, पेड़न के सर पै आरा बा...

जन एक्सप्रेस। प्रयागराज

आजादी का अमृत महोत्सव तथा पर्यावरण हेतु लाइफ स्टाइल के अंतर्गत भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र में जनभाषा में पर्यावरण के स्वरूप अवधी विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला एवं काव्य पाठ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। केन्द्र प्रमुख डॉ0 संजय सिंह ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि केन्द्र के इस सत्र में वानिकी विस्तार सामग्री अवधी भाषा में प्रकाशित करने की योजना है। कार्यशाला के माध्यम से वक्ताओं ने वन एवं पर्यावरण सम्बन्धी तकनीक तथा जागरूकता को प्रसारित करने के लिए संवाद एवं प्रकाशन को अवधी भाषा में करने पर बल दिया। वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए कहा कि वृक्षारोपण कार्यक्रम विशेषकर कृषिवानिकी हेतु किसानों को समझाने में अवधी भाषा सहायक है। पर्यावरण के प्रति समर्पित अजय क्रन्तिकारी ने अपनी पंक्तियों में मनुष्य को पर्यावरण का दोषी बताया। उन्होंने अवधी भाषा में कहा कि जीवन एसी म नाही, देशी म बाटय। प्रख्यात कवि अशोक सिंह बेशरम ने अपनी पंक्तियों में लोक रंगों और माटी की खुशबू से परिचय कराते हुए पेश किया कांव-कांव कागा कराई, बइठी के मुंडेरी, गवनै हेराई गवा, कहाँ-कहाँ हेरी। इसी क्रम में आचार्य अनीस देहाती ने सामाजिक प्रदूषण को पर्यावरण प्रदूषण का स्रोत बताया साथ ही कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत कर श्रोताओं की वाहवाही बटोरी। डिगरी तमाम लइके अहैं पान लगावत, हमरे सपूत यही बरे फेलई भले अहइ। शैलेन्द्र मधुर ने उपस्थित कवियों को हस्ताक्षर बताकर सम्बोधित किया, साथ ही पर्यावरण सब महकाई, एक-एक पेड़ सब लगाई पंक्ति के माध्यम से पर्यावरण बचाने का आह्वान किया। कार्यक्रम के अंत में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ0 अनुभा श्रीवास्तव ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में डॉ0 एस0डी0 शुक्ला, रतन गुप्ता के साथ अन्य कर्मचारी व विभिन्न शोधार्थी बिजय, राहुल, कुलदीप, दर्शिता, स्वाति, मोहया आदि उपस्थित रहे।

न्यूज डायरी

पर्यावरण सेना प्रमुख अजय सम्मानित

प्रतापगढ़। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद प्रयागराज में प्रकृति एवं पर्यावरण पर आयोजित कार्यशाला में पर्यावरण सेना प्रमुख अजय क्रांतिकारी को स्मृति चिंह देकर सम्मानित किया गया। पर्यावरण संरक्षण की जागरूकता के लिए परिषद की ओर से उन्हें सम्मानित किया गया। संवाद

पर्यावरण सेना प्रमुख अजय क्रांतिकारी ने अवधी भाषा में प्रकृति एवं पर्यावरण के स्वर विषय पर व्याख्यान देकर लोगो को पर्यावरण संरक्षण के लिए किया जागरुक

प्रवीण सिंह

प्रतापगढ़ भारतीय वानिकी एवं भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज (वन,पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारत सरकार) द्वारा प्रयागराज उ.प्र.में श्प्रकृति एवं पर्यावरण के स्वरश विषयक कार्यशाला में केंद्र प्रमुख डॉ संजय सिंह ने पर्यावरण सेना प्रमुख हरित पुरुष अजय क्रांतिकारी को स्मृति चिन्ह भेंट कर उनके पर्यावरणीय प्रयासों के लिए सम्मानित किया।केन्द्र प्रमुख डॉ संजय सिंह ने कहा कि लोगों को पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरुक करने हेतु अजय क्रांतिकारी की कोशिश और जागरुक करने की विधि सराहनीय है।पर्यावरण की रक्षा हेतु हमें लोगों को समझते हुए उनकी भाषा में ही चेतना का प्रयास करना करना होगा, तभी हमारे प्रयास फलीभूत होंगे।

पर्यावरण सेना प्रमुख अजय क्रांतिकारी ने पर्यावरण का दर्द साझा करते हुए सभी से प्रकृति और पर्यावरण के हित में कार्य करने की अपील किया और उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक समस्या को रोकने के लिए पर्यावरण के अनुकूल अपना व्यवहार परिवर्तन करना होगा।अजय क्रांतिकारी के इस सम्मान से पर्यावरण सेना के कार्यकर्ता उत्साहित हैं।कार्यक्रम का संचालन केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ आलोक यादव ने किया।

जनभाषा में पर्यावरण के स्वर विषय पर कार्यशाला आयोजित

प्रयागराज। आजादी का अमृत महोत्सव तथा पर्यावरण हेतु लाइफ स्टाइल वेज अंतर्गत भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा जनभाषा में पर्यावरण के स्वरूप : अवधी' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला एवं काव्य पाठ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। केन्द्र प्रमुख डॉ0 संजय सिंह ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत

करते हुए कहा कि केन्द्र के इस सत्र में वानिकी विस्तार सामग्री अवधी भाषा में प्रकाशित करने की योजना है। कार्यशाला के माध्यम से वक्ताओं ने वन एवं पर्यावरण सम्बन्धी तकनीको तथा जागरूकता को प्रसारित करने के लिए संवाद एवं प्रकाशन को अवधी भाषा में करने पर बल दिया। वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए कहा कि वृक्षारोपण कार्यक्रमों विशेषतः कृषिवानिकी हेतु किसानों को समझाने में अवधी भाषा सहायक है। पर्यावरण के प्रति समर्पित अजय क्रन्तिकारी ने अपनी पंक्तियों में मनुष्य को पर्यावरण का दोषी बताया। उन्होंने अवधी भाषा में कहा कि 'जीवन एसी म नाही, देशी म बाटय'। प्रख्यात कवि अशोक सिंह 'बेशर्म' ने अपनी पंक्तियों में लोक रंगों और माटी की खुशबू से परिचय कराते हुए 'कांव-कांव कागा कराई, बइठी के मुंडेरी, गवनै हेराई गवा, कहाँ-कहाँ हेरी'। इसी क्रम में आचार्य अनीस देहाती ने सामाजिक प्रदूषण को पर्यावरण प्रदूषण का स्रोत बताया साथ ही कुछ पंक्तियाँ कहीं कि 'डिगरी तमाम लइके अहैं पान लगावत, हमरे सपूत यही बरे फेलई भले अहइ'। शैलेन्द्र 'मधुर' ने उपस्थित कवियों को हस्ताक्षर बताकर सम्बोधित किया, साथ ही 'पर्यावरण सब महकाई, एक-एक पेड़ सब लगाई' पंक्ति के माध्यम से पर्यावरण बचाने का आह्वान किया। कार्यक्रम के अंत में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ0 अनुभा श्रीवास्तव ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में डॉ0 एस0डी0 शुक्ला, रतन गुप्ता के साथ अन्य कर्मचारी व विभिन्न शोधार्थी बिजय, राहुल, कुलदीप, दर्शिता, स्वाति, मोहया आदि उपस्थित रहे।

बाग - बगैचा खड़हर होइगा, पेड़न के सर पै आरा बा...

उर्ध्व नेत्र

प्रयागराज। आजादी का अमृत महोत्सव तथा पर्यावरण हेतु लाइफ स्टाइल के अंतर्गत भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज की ओर से शुक्रवार को 'जनभाषा में पर्यावरण के स्वरूप : अवधी' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला एवं काव्य पाठ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। केन्द्र प्रमुख डॉ0 संजय सिंह ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि केन्द्र के इस सत्र में वानिकी विस्तार सामग्री अवधी भाषा में प्रकाशित करने की योजना है। कार्यशाला के माध्यम से वक्ताओं ने वन एवं पर्यावरण सम्बन्धी तकनीको तथा जागरूकता को प्रसारित करने के लिए संवाद एवं प्रकाशन को अवधी भाषा में करने पर बल दिया। वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए कहा कि वृक्षारोपण कार्यक्रमों विशेषतः कृषिवानिकी हेतु किसानों को समझाने में अवधी भाषा सहायक है। पर्यावरण के प्रति समर्पित अजय क्रन्तिकारी ने अपनी पंक्तियों में मनुष्य को पर्यावरण का दोषी बताया। उन्होंने अवधी भाषा में कहा कि 'जीवन एसी म नाही, देशी म बाटय'। प्रख्यात कवि अशोक सिंह 'बेशर्म' ने अपनी पंक्तियों में लोक रंगों और माटी की खुशबू से परिचय कराते हुए 'कांव-कांव कागा कराई, बइठी के मुंडेरी, गवनै हेराई गवा, कहाँ-कहाँ हेरी। इसी क्रम में आचार्य अनीस देहाती ने सामाजिक प्रदूषण को पर्यावरण प्रदूषण का स्रोत बताया साथ ही कुछ पंक्तियाँ कहीं कि 'डिगरी तमाम लइके अहैं पान लगावत, हमरे सपूत यही बरे फेलई भले अहइ। शैलेन्द्र 'मधुर' ने उपस्थित कवियों को हस्ताक्षर बताकर सम्बोधित किया, साथ ही 'पर्यावरण सब महकाई, एक-एक पेड़ सब लगाई' पंक्ति के माध्यम से पर्यावरण बचाने का आह्वान किया। कार्यक्रम के अंत में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ0 अनुभा श्रीवास्तव ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में डॉ0 एस0डी0 शुक्ला, रतन गुप्ता के साथ अन्य कर्मचारी व विभिन्न शोधार्थी बिजय, राहुल, कुलदीप, दर्शिता, स्वाति, मोहया आदि उपस्थित रहे।

वन अनुसंधान केन्द्र ने अजय क्रांतिकारी को किया सम्मानित

प्रतापगढ़, 25 मार्च (तरुणमित्र)। भारतीय वानिकी एवं भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज (वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारत सरकार) द्वारा प्रयागराज उप्र में 'प्रकृति एवं पर्यावरण के स्वर' विषयक कार्यशाला में केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने पर्यावरण सेना प्रमुख हरित पुरुष अजय क्रांतिकारी को स्मृति चिन्ह भेंट कर उनके पर्यावरणीय प्रयासों के लिए सम्मानित किया।

केन्द्र प्रमुख डॉ संजय सिंह ने कहा कि लोगों को पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरुक करने हेतु अजय क्रांतिकारी की कोशिश और जागरुक करने की विधि सराहनीय है। पर्यावरण की रक्षा हेतु हमें लोगों को समझते हुए उनकी भाषा में ही चेतना का प्रयास करना करना होगा, तभी हमारे प्रयास फलीभूत होंगे।

पर्यावरण सेना प्रमुख अजय क्रांतिकारी ने पर्यावरण का दर्द साझा करते हुए सभी से प्रकृति और पर्यावरण के हित में कार्य करने की अपील किया और उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक समस्या को रोकने के लिए पर्यावरण के अनुकूल अपना व्यवहार परिवर्तन करना होगा।अजय क्रांतिकारी के इस सम्मान से पर्यावरण सेना के कार्यकर्ता उत्साहित हैं। कार्यक्रम का संचालन केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. आलोक यादव ने किया।